प्रकाशन नं.
79

सिख धर्म की प्राथमिक जानकारी

गुरमति हमने सीखनी और सिखानी है।
अमृतधारी कौम बनानी है।

करना सिखी का प्रचार।
सारी दुनियां के विचकार।

6/-
रुपये

सिख मिशनरी कालेज (रजि.)
लुधियाना

१ੴ वाहिगुरु जी की फतहि॥

प्रकाशन नंः 79

सिख धर्म की प्राथमिक जानकारी

प्रकाशक

सिख मिशनरी कॉलेज (रजिः)

लुधियाना

सिख धर्म के मूल सिद्धान्त

(अकाल पुरख क्या है, और कैसे मिल सकता है ?)

मूल पाठ : १ੴ सतिनामु, कर्ता पुरखु, निरभउ, निरवैरु, अकाल मूर्ति अजूनि, सैभं गुरप्रसादि ॥

उच्चारण पाठ : इक ओ-अँकार, सतनाम, कर्ता पुरख, निरभउ, निरवैर अकाल मूर्त, अजूनी, सैभं, गुरप्रसाद ॥

इक (१)—अकाल पुरख एक है। उसके तुल्य और कोई नहां।

ओंकार (ੴ) वह सभ में एक रस व्यापक है।

सतिनामु—उसका नाम सत्य है। स्थाई अस्तित्व वाला है।

कर्त्ता—जो सारी सृष्टि की रचना करने वाला है।

पुरखु—वह सब कुछ बना कर उसमें व्यापक है।

निरभउ—उसे किसी का भय नहीं है।

निरवैरु—उसकी किसी से शत्रुता नहीं।

अकाल मूर्ति—उसका स्वरूप काल रहत है अर्थात समय का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बचपन, जवानी, बुढ़ापा व मृत्यु आदि उसे नहीं आती।

अजूनी—वह योनियों में नहीं आता। न वह जन्म लेता है और न मरता है।

सैभं—उसका प्रकाश स्वयं से है। उसे किसी ने नहीं बनाया है।

गुरप्रसादि—वह अकाल पुरख सतिगुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

नोट (१) १ੴ से गुरप्रसादि तक सिखी का मूल मंत्र है।

(२) १ੴ का शुद्ध उच्चारण **इक ओ-अँकार** है।

(३) अजूनी सैभं का उच्चारण अलग अलग करना है।

२. दस गुरु साहिबान

पहली पातशाही **श्री गुरु नानक देव जी।**

दूसरी पातशाही **श्री गुरु अंगद देव जी।**

तीसरी पातशाही **श्री गुरु अमर दास जी।**

चौथी पातशाही श्री गुरु राम दास जी।
पांचवी पातशाही श्री गुरु अर्जुन देव जी।
छठी पातशाही श्री हरिगोबिंद जी।
सातवीं पातशाही श्री हरि राय जी।
आठवीं पातशाही श्री हरि कृष्ण जी।
नौवीं पातशाही श्री तेग बहादुर जी।
दसवीं पातशाही श्री गोबिंद सिंघ जी।

दसों पातशाहियों (गुरुओं) की आत्मिक ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी।

३. पाँच प्यारे

१. भाई दया सिंघ जी
२. भाई धर्म सिंघ जी।
३. भाई हिम्मत सिंघ जी।
४. भाई मोहकम सिंघ जी।
५. भाई साहिब सिंघ जी।

४. चार साहिबज़ादे
(गुरु गोबिन्द सिंघ जी के सपुत्र)

१. साहिब अजीत सिंघ जी।
२. साहिब जुझार सिंघ जी।
३. साहिब जोरावर सिंघ जी।
४. साहिब फतेह सिंघ जी।

५. पांच तख्तों के नाम

१. श्री अकाल तख्त साहिब जी, अमृतसर (पंजाब)
२. श्री हरिमन्दिर साहिब, पटना साहिब (बिहार)
३. श्री केसगढ़ साहिब, आन्दपुर साहिब (पंजाब)
४. श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो, बठिंडा (पंजाब)
५. श्री हज़ूर साहिबु नांदेड़ (महाराष्ट्र)

६. फतहि

जब सिख आपस में मिलते हैं, तो फतहि बुला कर अभिवादन करते है । फतहि यह है :—

वाहिगुरु जी का खालसा ॥
वाहिगुरु जी की फतहि ॥

फतहि बुलाते समय वाहिगुरु शब्द से पूर्व श्री नहीं लगाया जाना चाहिए । गुरु गोबिंद सिंघ जी का यह आदेश है कि जब भी एक सिख दूसरे सिख को मिलेगा, तो आपस में फतहि बुला कर अभिवादन करेगा । इसलिये हमें आपस में मिलते समय फतहि बुलानी चाहिए ।

७. जैकारा

बोले सो निहाल ।
सति सिरी अकाल ॥

यह सिंघों का जैकारा है । जैकारा आरदास के पश्चात् दीवान में बुलाया जाता है । रणक्षेत्र व युद्धों में भी इस जैकारे को गजाया जाता है । जयकारा अर्थात् जय-कार ।

सिख की परिभाषा

जो स्त्री या पुरुष एक अकालपुरुख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिन्द सिंघ साहिब तक), श्री गुरु ग्रंथ साहिब और दस गुरु साहिबान की बाणी व शिक्षा और दशमेश जी के अमृत पर निश्चिय रखता है और किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिख है।

९. हमारा गुरु

हम सिख हैं। सिख धर्म की नींव गुरु नानक देव जी ने रखी थी । दस गुरु साहिबान ने सिखी का प्रचार किया । सन् १७०८ ई॰ में नांदेड़ में गुरु गोबिंद सिंघ जी ने, गुरु ग्रंथ साहिब जी और पांच प्यारों को प्रणाम किया और घोषित किया कि आज के पश्चात् गुरु ग्रंथ साहिब जी ही हमारे गुरु होंगे । कोई व्यक्ति विशेष अर्थात्

देहधारी गुरु नहीं होगा। गुरु जी ने खालसा पंथ की अगवानी पाँच प्यारों के हाथ दी थी। अब हमारे सारे फैसले पाँच प्यारे ही कर सकते है। सारे फैसले गुरुबाणी अनुसार ही होंगे। कोई एक मनुष्य फैसला नहीं दे सकता सभी निर्णय गुरू ग्रंथ साहिब की हजूरी में पांच प्यारे ही कर सकते है। क्योंकि गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने ज्योति में विलीन होने के समय ये उपदेश दिया था कि **"आत्मा ग्रंथ विच ते सरीर पन्थ विच"**

गुरु ग्रंथ साहिब जी दस गुरु साहिबान की आत्मिक ज्योति है। पांच प्यारे गुरु का शरीर है। गुरु ग्रंथ साहिब में गुरुओं के आदेश गुरुबाणी के रूप में लिखे गए है। पांच प्यारे, गुरु ग्रंथ साहिब जी की रहनुमाई में रह कर सिख पंथ की अगवानी करेंगे। गुरु ग्रंथ साहिब जी में गुरुबाणी लिखी हुयी है। इसलिये हमारा गुरु गुरबाणी है। हमने अब किसी मनुष्य के गुरू नहीं मानना। जो पुरुष अपने आप को गुरु कहलवाता है वह गलत है, पाखण्डी है, झूठा है। देह तो नाश हो जाती है, परन्तु गुरु तो हमेशा कायम रहता है। जो जन्म लेता है वह मरता भी है। सिखों का गुरु तो शब्द है देह नहीं।

१०. प्रणाम करना
(मत्था टेकना)

सिख गुरुद्वारे जाकर गुरु ग्रंथ साहिब जी को सम्मुख प्रणाम करता (मत्था टेकना) है। प्रणाम करने का अर्थ है कि हम गुरु ग्रंथ साहिब की प्रत्येक आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार है।

प्रणाम करने के पश्चात् खड़े हो कर मन में फतहि बुलानी चाहिए। गुरसिख कभी भूल कर भी देहधारी गुरु को प्रणाम नहीं करता। किसी मूर्त्ति अथवा तस्वीर के आगे प्रणाम करना, गुरसिख को वर्जित है।

जो गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त अन्य देहधारी गुरुओं को प्रणाम करता है वह गुरसिख नहीं है। **हमने केवल गुरु ग्रंथ साहिब को ही प्रणाम करना है, अन्य किसी को नहीं। हमारे गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ही हैं।**

११. अच्छा सिख बालक

- अच्छा सिख बालक तड़के (अमृत वेला में) उठता है।
- परिवार के सभी सदस्यों को वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह बुलाता है।

- अच्छा बालक दांतों की सफाई उपरांत स्नान करता है ।
- केशों को कंघा करने के पश्चात दस्तार (पगड़ी) बाँधता है ।
- दस्तार बाँध कर गुरबाणी का पाठ करता है ।
- फिर गुरुद्वारे में जा कर प्रणाम करके कीर्त्तन सुनता है ।
- गुरुद्वारे से घर आकर नाश्ता करके स्कूल जाता है ।
- स्कूल की पढ़ाई मन लगाकर करता है ।
- कभी किसी से झगड़ता नहीं ।
- कभी किसी को गाली नहीं निकालता ।
- हर एक के साथ मीठा बोलता है ।
- कभी झूठ नहीं बोलता ।
- स्कूल से सीधा घर आता है ।
- शारीरिक व्यायाम तथा खेलों में भी भरपूर हिस्सा लेता है ।
- हर रोज़ वाणी का पाठ तथा शब्द याद करता है ।
- कभी नंगे सिर नहीं रहता ।
- शाम को रहरासि साहिब का पाठ सब बहन भाइयों के संग मिलकर करता है ।
- रात को सोते समय **'सोहिला'** की बाणी का पाठ करता है ।
- हर समय वाहिगुरु को अंग-संग (अपने साथ) समझता है ।

माता-पिता अच्छे बच्चे को प्यार करते है । इस तरह के अच्छे बच्चे पर गुरु जी भी प्रसन्न होते है । **हमें भी ऐसे ही अच्छे बालक बनना है ।**

१२. हमारा संयुक्त परिवार

हम सब एक परिवार के सद्सय है । **खालसा पंथ** हमार संयुक्त परिवार है । गुरु गोबिन्द सिंघ जी हमारे धार्मिक पिता है । माता साहिब कौर जी हमारी धार्मिक माता है । हमारा जन्म स्थान श्री केसगढ़ साहिब है । हम सब श्री आनन्दपुर साहिब के वासी है ।

हम सबके गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब हैं । हम सब अमृत पान करके खालसा पंथ के सदस्य बनते है । हम सबकी शक्ल एक जैसी है । हम सब की **'पांच ककारों'** वाली वर्दी भी एक जैसी है । चूंकि हम सब खालसा परिवार के सदस्य है । इसलिये

सारे बहन-भाई है। हम सब दुःख-सुख में भागीदार है। हम अमृत-पान करके ही साँझे परिवार के सदस्य बन सकते हैं। **इसलिये हम सबको अमृतपान करना चाहिए।**

१३. अमृत एक प्रण

कई लोग अमृतपान नहीं करते। वे डरते हैं कि उनसे अमृत का अनादर हो जायेगा। यह उनकी भूल है। प्रत्येक धर्म या समाज में प्रवेश के पूर्व प्रण लेना पड़ता है। अमृत सिखी में प्रवेश होने के लिये एक प्रण है। इस का अर्थ है गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु धारण करना, पांच प्यारों द्वारा बताई गई रहित मर्यादा अनुसार चलने (जीवन जीने) का प्रण करना। यह प्रण करने वाला, केवल एक अकाल पुरख वाहिगुरु का ही सिमरण करता है। धर्म की सच्ची (नेक) कमाई करता, ज़रूरतमंदों को बांट कर खाता है। सरबत का भला मांगता है। पांच कंकारों की वर्दी पहन कर गुरु जी का सच्चा भरोसेमंद सिख बन जाता है।

अमृतधारी सिख ऐसा कोई काम नहीं करता, जो गुरु जी ने वर्जित कर रखा हो। वह चारों कुरहितों (वर्जित कर्मों को) नहीं करता। कोई नशा नहीं करता। कोई वहम भ्रम नहीं करता। कोई व्रत नहीं रखता। सिवाय अकाल पुरख के किसी देवी-देवता को सिख नहीं मानता। सांप, पेड़, कबें या मड़ियों की पूजा नहीं करता और न ही धागे तावीज़, जादू टोने आदि में विश्वास रखता है। जो सिख अमृतपान नहीं करते, उन के लिये गुरु गोबिन्द सिंघ जी का हुक्म है :—

धरे केश पाहुल बिना, भेखी मूड़ा सिख ॥
मेरा दर्शन नाहि तिस, पापी तिआगे भिख ॥

अर्थात् यदि किसी ने केश तो रखे हुए हैं पर अमृतपान नहीं किया है, वह बहरुपिया है। वह तो केवल सिख होने का ढोंग कर रहा है और झूठ बोलता है कि मैं सिख हूँ। गुरु जी कहते हैं कि मैं ऐसे झूठे व्यक्ति को दर्शन नहीं देता।

यदि हमने अमृतपान नहीं किया तो हमें तुरन्त तैयार होकर अमृतपान कर लेना चाहिए। तब ही हम गुरु जी के सच्चे सिख बन सकते हैं।

सिख का मतलब है कि वह गुरु वाला है। इसने गुरु धारण किया हुआ है। इस बात का फैसला तो गुरु जी ने करना है कि कौन उसका सिख है और कौन नहीं। फिर गुरु का फैसला यही है कि जो अमृतपान करेगा वही मेरा सिख है। **आओ, हम अमृतपान करें और गुरु के सिख बनें।**

१४. पांच ककार

१. केश २. कंघा ३. कड़ा ४. कछहरा ५. कृपाण।

हर एक सिख के लिये पांच ककारों की वर्दी पहनना अनिवार्य है। इस प्रकार सिख दूसरों से अलग पहचाना जाता है।

१. केश—केशों से सिख की, दूसरों से अलग पहचान होती है। सिख केश नहीं कटवाता। भले ही जान चली जाये। सिख केशों को गुरु की मोहर (खज़ाना) समझता है। सिख नंगे सिर नहीं रहता। नंगे सिर केशों में धूल मिट्टी पड़ती है। इसलिये सिख केशों को दस्तार (पगड़ी) से ढक कर रखते है। जो दाढ़ी या केश कटवाता है, उसे पतित अर्थात् धर्म से गिरा हुआ व्यक्ति कहते हैं। पतित सिख, सिख धर्म की श्रेणी से निकाले गये व्यक्ति को कहा जाता है। सिख स्त्रियों को भी केशों का अपमान नहीं करना चाहिये। आँखों की भौहें काटना भी केशों का अनादर करना है।

२. कंघा—कंघा केशों की सफ़ाई के लिए होता है। सिख कंघे को हर समय केशों में रखते हैं। सिखों के केश बिखरे नहीं रहते। कंघा लकड़ी का ही होना ज़रूरी है। सिख दोनों समय (सुबह शाम) कंघा करता है। कंघा करने से केश साफ़ रहते है और शरीर चुस्त रहता है। कंघा इस बात का प्रतीक है कि सिख कभी ढीला-ढाला (सुस्त) नहीं रहता। इसलिये हर सिख को अपने केशों में लकड़ी का कंघा रखना चाहिये।

३. कड़ा—कड़ा लोहे का होता है। सोने चांदी या और किसी अन्य धातु का बना कड़ा, गुरु जी द्वारा प्रदान किया हुआ नहीं है। यह ककार नहीं कहला सकता। कड़ा इस बात का प्रतीक है कि सिख किसी प्रकार के वहम-भ्रम में विश्वास नहीं रखते। कड़ा पहनना सिख के लिये अति आवश्यक है।

४. कछहरा—प्रत्येक सिख कछहरा पहनता है। सिख का कछैहरा भी दूसरों से भिन्न होता है। कछहरा रेबदार होता है। सिख कछ्छी, जांघिआ, नीकर-कछहरा व पट्टेदार कछा नहीं पहनते। कछहरे की बनावट सुसज्जित व भिन्न किस्म की होती है। सिख का कछहरा उसके उच्चे सुच्चे आचरण का प्रतीक है।

५. कृपाण—सिख कृपाण् पहनता है। कृपाण बहादुर लोग पहनते है। गुरु जी ने सब सिखों को बहादुर बनाया है। कृपांण सिख की स्वतंत्र व्यक्तित्व को प्रकट करती है। सिख किसी का गुलाम नहीं हो सकता। कंघे से जुड़ी कृपाण को ककार नहीं कहते। कृपाण गातरे सहित गले में डाली जाती है। धागे में पिरो कर गले में डाली जाने वाली कृपाण कभी ककार नहीं कहलवा सकती।

---

१५. चार कुरहितें (चार विवर्जन)

१. केशों का अपमान करना (काटना या कतरना)

२. तम्बाकू का सेवन करना।

३. हलाल अथवा कुठ्ठा मास खाना (मुसलमानी तरीके से कलमा पढ़कर तैयार किया गया मांस)

४. पर-स्त्री या पर-पुरुषगामी होना।

इनमें से एक भी कुरहित (विवर्जन) करने से सिख सिख नहीं रहता, पतित हो जाता है।

सिखी में पुनः प्रवेश करने के लिये पांच प्यारों के पास गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में पेश होना पड़ता है, भूल बख्शवा कर सज़ा लगवानी पड़ती है, फिर पुनः अमृतपान करना पड़ता है।

१६. केशों का सत्कार

केश गुरु की मोहर है। केश महान् गुरु जी की महान् देन है। हम केशों से ही सिख पहचाने जाते है। केशों की खातिर हमारे महान् शहीदों ने शहीदियां प्राप्त की परन्तु केशों का अपमान नहीं होने दिया। इसलिए केशों का आदर करना हमारा परम कर्त्तव्य है। जो व्यक्ति केशों का आदर नहीं करता, केश कटवाता है उसको सिख नहीं कहा जा सकता।

सिख बच्चे, हमेशा सिर पर दस्तार सजाते है। दस्तार की जगह पर, पटका नुमा रूमाल बाँधे रखना शोभा नहीं देता। सिख बच्चे कभी भी नंगे सिर बाहर नहीं जाते। नंगे सिर भोजन नहीं करते। नंगे सिर रहने से धूल मिट्टी सिर में पड़ती है। केशों में कंघा न करने से बिखरे हुए केश शोभा नहीं देते। हमें हमेशा केशों को दस्तार अथवा चुन्नी से पूरी तरह ढाँपकर बाहर जाना चाहिये।

सिख बालकाएं हमेशा सिर पर दस्तार अथवा दुपट्टा करती हैं। दस्तार अथवा दुपट्टे से केश ढके रहते हैं। नंगे सिर रहने वाले बालक-बालकाओं पर, गुरु जी प्रसन्न नहीं होते। **इसलिये हमें सदा केशों को ढक कर रखना चाहिए क्योंकि केश हमारे गुरु जी की महान देन है।**

१७. खालसा कौन ?

जागत जोति जपै निसबासुर, एक बिना मन नैक न आनै।

पूरण प्रेम प्रतीत सजै, ब्रत, गोर, मड़ी, मट भूल न मानै।

तीरथ दान दइआ तप संजम, एक बिना नहि एक पछानै।
पूरन जोत जगै घट मैं, तब खालस ताहि नखालस जानै।
(३३ सवैये, गुरु गोबिंद सिंघ जी)

जो मनुष्य अपने मन में प्रभु का ध्यान दिन रात करता है।
जो एक प्रभु के अतिरिक्त किसी अन्य को थोड़ा सा भी मन में नहीं लाता।
जो प्रभु पर पूर्ण विश्वास रखता है और सच्चा प्रेम करता है।
जो भूल कर भी व्रत नहीं रखता, कबें, मड़ियों और मट्ठों की पूजा नहीं करता।

जो तीर्थ यात्रा, दिखावे के लिए दान, वहम, भ्रमों वाली दया तथा शरीर को कष्ट देने वाली तप साधना नहीं करता और न ही मानता है। केवल प्रभु प्यार को ही अपना जीवन मनोरथ समझता है।

जिसके मन में प्रभु के पूर्ण ज्ञान की रोशनी है वही मनुष्य ही आदर्शक इन्सान है। ऐसा धर्मी पुरुष ही पूर्ण खालसा कहलवा सकता है। भाव वही खालसा है।

१८. शराब—एक बुराई

शराब पीना सिखों के लिए बिल्कुल मनाह है। गुरबाणी का वाक्य है :—

जित पीतै मति दूर होइ, बरल पवै विचि आइ॥
आपाणा पराइआ न पछाणई, खसमहु धक्के खाइ॥
जित पीते खसम बिसरै दरगाह मिलै सजाइ।
झूठा मद, मूल न पीचई, जेका पारि वसाइ॥ (श्लोक, म: ३, पृष्ठ ५५४)

उच्चारण :—

जित पीते मत दूर होए, बरल पवै विच आए॥
आपणा पराइआ न पछाणई, खसमों धक्के खाए॥
जित पीते खसम वीसरै, दरगह मिलै सज़ाए॥
झूठा मद मूल न पीचई, जेका पार वसाए॥

अर्थ—जिस शराब के पीने से शराबी अपनी होश भूल जाता है और ऊट पटांग बोलने लगता है। अपने पराए की पहचान भी खो जाती है और प्रभु की तरफ से भी धक्के पड़ते है। जिस शराब के पीने से प्रभु को भूलने की सज़ा भोगता है, ऐसी बुरी चीज़ (शराब) कभी भूल कर भी नहीं पीनी चाहिए।

- शराब पीने वाला अपना होश गंवा लेता है ।
- शराब पीने वाले नशे में ऊंट-पटांग बोलते है ।
- शराब पीने वाले गंदे नाले व कीचड़ में गिरे होते हैं ।
- शराब पीने वाले को अपने-पराये की तमीज़ नहीं रहती ।
- शराब पीने वाले का जिगर खराब हो जाता है ।
- शराब पीने से शरीर निर्बल हो जाता है और पेट गुब्बारे की तरह फूलने लगता है ।
- शराब पीने वालों को जवानी में ही दिल की बीमारी हो जाती है ।
- शराब पीने वालों से इतनी गंदी बदबू आती है कि पास नहीं बैठा जाता ।
- शराब पीने वालों को दिल का दौरा पड़ने लगता है । दिल का दौरा अधिकतर शराबियों को ही पड़ता है ।
- शराब से शरीर की नाड़ियां कमज़ोर हो जाती है ।
- कई लोग शराबियों को शराब पिला कर अपना बदला निकालते है ।
- शराबी जा रहा हो तो ऐसे लगता है जैसे कोई पगला पागलखाने जा रहा हो ।
- शराब पीकर गाड़ी चलाने वाले दुर्घटनाएं कर बैठते हैं । इसलिये हमें शराब बिल्कुल नहीं पीनी चाहिए ।

हम गुरु जी के सच्वें सिख तभी कहलवा सकते है यदि शराब जैसी बुराई से बचकर वाहिगुरु के नाम का सच्चा नशा पीने के आदी बनें ।

१९. तम्बाकू (बीड़ी-सिग्रेट) —एक अभिशाप

तम्बाकू पीना या खाना सिख के लिये मनाह है ।

भाई देसा सिंघ जी के रहितनामे में ऐसे लिखा हुआ है :—

कुट्ठा, हुक्का, चरस, तम्बाकू ॥
गांजा, टोपी, ताड़ी, खाकू ॥
इन की ओर न कबहूं देखे ॥
रहितवंत सो सिंघ विसेखे ॥

भाव गुरु का सिख किसी किस्म का नशा नहीं करता ।

- सिग्रेट बीड़ी तम्बाकू से बनती है ।
- तम्बाकू की बदबू बहुत गन्दी होती है ।

- तम्बाकू का प्रयोग करने वाले व्यक्ति ठीक तरह से सांस नहीं ले सकते और फेफड़ों में कालिख जम जाती है।
- तम्बाकू पीने वाले को दमे जैसी असाध्य बीमारी लग सकती है।
- तम्बाकू में 'निकोटीन' नामक जहर होती है, जिससे फेफड़े गल जाते है। हर समय टी. बी. (तपेदिक) की भयानक बीमारी लगने का अंदेश बना रहता है।
- तम्बाकू पीने वालों को कैंसर रोग भी हो जाता है जिससे बहुत से रोगी मर जाते है।
- तम्बाकू का प्रयोग करने वाले की उंगलियों व होंठ खराब हो जाते है। दांत गल जाते और मसूड़े कमज़ोर हो जाते है।
- तम्बाकू बड़ा ज़हरीला होता है। यदि एक तिनका भी मुर्गो को खिला दिया जाये तो वह वहीं पर मर जायेगी।
- सिग्रेट बीड़ी पीने वालों को लापरवाही से कई बार आग भी लग जाती है जो भयानक बर्बादी का कारण भी बन जाती है।

समझदार हिन्दू भी तम्बाकू से धृणा करते है और तम्बाकू पीने वाले के पास बैठना पसन्द नहीं करते।

हमें सिग्रेट-बीड़ी पीने वालों के पास नहीं बैठना चाहिए। सिग्रेट-बीड़ी पीने वालों के हाथ से कोई वस्तु ले कर नहीं खानी चाहिये। सिग्रेट-बीड़ी का धुआं भी अपने ऊपर नहीं पड़ने देना चाहिए। यदि कोई पास बैठ कर बीड़ी पी रहा हो तो उसे मना कर देना चाहिये।

गुरु जी ने तम्बाकू की बुराई से सिखों को बचा लिया है। तम्बाकू पीने वाला सिख नहीं रह जाता। इसीलिए गुरु का सिख कभी तम्बाकू या सिग्रेट बीड़ी को हाथ भी नहीं लगाता

२०. पान

- पान बड़ी गन्दी चीज़ है।
- पान खाने से दांत खराब हो जाते है।
- पान खाने से पाचन शक्ति कमज़ोर हो जाती है।
- पान आँखों की ज्योति को कमज़ोर करता है।
- पान खाने वाला अच्छे लोगों की संगत में नहीं बैठ सकता।

- पान खाने वाले के मुँह से थूक गिरती रहती है ।
- पान खाना बड़ी गन्दी आदत है ।
- अच्छे लोग इसका प्रयोग नहीं करते ।
- पान खाने से मसूड़ों में मवाद पड़ जाता है और कैंसर की बीमारी होने का खतरा बना रहता है ।

सिखों को पान खाना गुरु जी ने सख्त मनाह किया है ।

२१. स्नान

- शरीर की सफाई के लिये स्नान करना ज़रूरी है ।
- हर रोज़ स्नान करने से शरीर तंदरुस्त रहता है ।
- अमृत वेले (तड़के) स्नान करने से सारा दिन शरीर चुस्त रहता है ।
- जैसे शरीर की सफाई के लिए स्नान करना आवश्यक है वैसे ही मन की सफाई के लिये वाहिगुरु का सिमरणा तथा गुरबाणी का विचार करना ज़रूरी है ।
- जैसे शरीर की तंदरुस्ती के लिये हर रोज़ स्नान करना अति आवश्यक है, वैसे ही मन की पवित्रता के लिये हर रोज़ गुरबाणी पढ़ना और समझना भी बहुत ज़रूरी है ।
- शरीर की मैल पानी से उतरती है और मन की मैल गुरबाणी से उतरती है ।

२२. सिख त्योहार

प्रत्येक कौम के अपने अपने त्योहार होते है । जैसे राखी, लोहड़ी, टिक्का, करवा चौथ, लक्ष्मी पूजा, दशहरा, जन्माष्टमी, राम नवमी, आदि हिन्दुओं के त्योहार है । ईद, बकरीद आदि मुसलमानों के त्योहार है । क्रिसमिस, गुड फ्राईडे आदि ईसाइयों के त्योहार है । इसी तरह सिख कौम के भी निम्नलिखित त्योहार है :—

(क) गुरु साहिबान के प्रकाश उत्सव ।

(ख) गुरु साहिबान के गुर गद्दी दिवस ।

(ग) गुरु साहिबान के ज्योति ज्योत समाने तथा शहीदी दिवस ।

(घ) खालसा जी का साजना दिवस ।

(ङ) **पुरातन तथा वर्तमान गुरु सिखों के ऐतिहासिक दिवस।**

(च) **सिख शहीदों के शहीदी दिवस।**

जैसे हर कौमें अपने-अपने त्योहार मनाती है वैसे ही सिखों को भी अपने त्योहारों में जोशो-खरोश से भाग लेना चाहिए।

गुरुपूर्व और ऐतिहासिक दिवस पर खास तौर पर दीवानों के प्रबन्ध होते है। रागी, कीर्त्तन करने वाले प्रेमी गुरसिख गुरबाणी का कीर्तन करते है। गुरबाणी विचार कथा होती है। सिख इतिहास पर लैक्चर होते है। ढाडी सिंघ इतिहास की वीर रस वाली वारें गाते है। अन्ततः गुरु का लंगर होता है जो सभी मनुष्य बिना किसी भेद भाव के निःशुल्क लंगर में खा सकते है।

इन दिनों में अमृत संचार का भी प्रबन्ध किया जाता है ताकि जिन गुरसिखों ने अमृतपान नहीं किया होता, वह अमृत पान करके गुरु वाले हो सकें। यदि प्रबन्धक गुरुद्वारों में अमृतपान का प्रबन्ध नहीं करते, तो यह समझ लेना चाहिए कि उनको सिख त्योहार मनाने का ढंग ही मालूम नहीं है। अमृत संचार हर एक त्योहार का एक ज़रूरी हिस्सा है।

बहुतेरे सिख गुरबाणी का कीर्त्तन, कथा, लैक्चर के प्रोग्राम में शामिल नहीं होते लेकिन लंगर खाने के समय पर पहुंच जाते है। इस तरह उनको गुरु हुक्मों का ज्ञान नहीं होता जहां पर शरीर की तृप्ति लंगर से हो जाती है वहां पर मन की तृप्ति गुरु शब्द से भी करनी अति ज़रूरी है।

बहुत से सिख गुरपूर्व के दिन भी घर में ही बैठे रहते है या अपने कारोबार में ही व्यस्त रहते है, उनको ऐसा करना उचित नहीं है। **हर सिख का यह मूल सिद्धांत है कि वह हर त्योहार में खूब बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले कर, गुरु का उपदेश सुन कर, मान कर अपने जीवन को गुरु हुक्म के मुताबिक बनाए।**

२३. जात-पात

हमें सभी को एक अकालपुरख ने ही पैदा किया है। वह हम सब का सांझा पिता है। जो प्राणी अच्छे काम करता है, वाहिगुरु का सिमरण तथा लोगों की सेवा करता है तो उसको लोग अच्छा पुरुष जानकर उसका आदर-मान करते है और सत्कार करते हैं। वाहिगुरु जी भी ऐसे इन्सान पर प्रसन्न होते हैं। परन्तु जो मनुष्य बुरे काम करता तथा लोगों को तंग करता है, प्रभु का सिमरण नहीं करता, वह व्यक्ति नीच कर्मी माना जाता है और प्रभु भी उस पर प्रसन्न नहीं होता।

कुछ लोग मनुष्यों में जात-पात से बंटवारे डाल देते है और कहते हैं कि हम

ऊँची जाति के हैं, हम ब्राह्मण है, हम बेदी है, हम सोढ़ी कुल के है। ऐसे लोग दूसरों को नीच (शूद्र) समझते है और कहते है कि शूद्र नीच जाति है। इनके हाथ के स्पर्श हुई कोई वस्तु नहीं खाते। उन्हें अपने पास भी नहीं बैठने देते। लेकिन वास्तव में इस तरह सोचने वाले लोग स्वयं घटिया किस्म के होते हैं। जो लोगों में जात-पात का बंटवारा करते है, ऐसे लोगों पर वाहिगुरु जी कभी प्रसन्न नहीं होते।

हम लोग गुरबाणी पढ़ते हैं तो हमें ज्ञान हो जाता है कि सिख जात-पात में विश्वास नहीं करता। जब हम पांच प्यारों से अमृतपान करते हैं तो एक ही बाटे में से सबको अमृतपान कराया जाता है। जब हम गुरु के लंगर में भोजन करने जाते है तो सबको एक ही पंक्ति में बैठ, बिना किसी भेद-भाव के भोजन करते हैं। गुरुद्वारे में बिना किसी भेद भाव के बैठ कर गुरबाणी सुनते हैं। सरोवर, बावली में भी बिना किसी भेद-भाव के स्नान करते है। इन सब से हमें पता चलता है कि सिख धर्म में जात-पात के लिये कोई स्थान नहीं है। **इसलिए हमें अपने नाम के साथ 'सिंघ' या 'कौर' ही लिखना है और जात अथवा गौत्र नहीं लिखना।**

२४. ईश्वर का घर
(रब्ब दा घर)

ईश्वर के अनेक नाम हैं। **वाहिगुरु** भी ईश्वर के अनेकों नामों में से एक नाम है। सभी कुछ जो हम देखते हैं, वाहिगुरु का बनाया हुआ है। सारे मनुष्य वाहिगुरु के बनाये हुए है। सारे पशु-पक्षी एवं सारी वनस्पति वाहिगुरु जी ही देन है। वाहिगुरु, जो हम सबके अन्दर बसते है, वह हम से दूर नहीं, सदा हमारे अंग-संग है।

धरती, आकाश, आग, पानी, हवा सब वाहिगुरु जी ने हमारे लिए ही बनाए हैं। सूर्य व चन्द्रमा भी वाहिगुरु ने हमारी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बनाए हैं। जिस वाहिगुरु ने इन सब वस्तुओं को हमारे लिए बनाया है, हमें सदा उसको याद रखना चाहिए। वाहिगुरु जी सारी रचना रच कर उसमें ही समाकर बस रहे हैं। इसलिए वाहिगुरु जी हमसे दूर नहीं है।

कुछ लोग किसी खास स्थान या खास तीर्थ को ही ईश्वर का घर समझते है। पर ऐसा समझना ठीक नहीं है क्योंकि **जब हम बाणी पढ़ते हैं तब हमें पता चलता है कि सारा संसार ही वाहिगुरु जी का घर है।**

२५. गुरुद्वारे कैसे जायें

वाहिगुरु जी के गुण-गायन के लिये हम गुरुद्वारे जाते है। प्रत्येक गुरुद्वारे में गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश (स्थापना) होता है। हमें बड़े आदर सहित, हाथ-पैर

धोकर, स्वच्छ हो करके गुरुद्वारे में जाना चाहिए। प्रेम व आदर सहित मत्था टेकना चाहिए। मत्था टेकते समय, जो माया अर्पण करनी हो वह दूर से फैंकनी नहीं चाहिये, बल्कि बड़े सत्कार सहित गोलक में डालनी चाहिए। प्रेम से मत्था टेक कर, साध-संगत के दर्शन करके मन ही मन में फतेह बुला कर संगत में, जहां भी स्थान मिले, आराम से बैठ जाना चाहिए। संगत में बैठकर कथा कीर्तन श्रवण करना चाहिए। गुरुद्वारे में बैठकर बातें नहीं करनी चाहिए। यदि कोई बात करनी हो तो हमें बाहर आ जाना चाहिए। एक दफा बाहर आकर यदि फिर गुरुद्वारें के अन्दर जाना पड़े तो मत्था ज़रूर टेकना चाहिए। अरदास करते समय दोनों हाथ जोड़ कर आदर-सम्मान से खड़े होना चाहिए।

दीवान की समाप्ति पर कड़ाह प्रसाद लेते वक्त भी जल्दी नहीं मचानी चाहिए। बड़े प्यार सत्कार से बैठ कर प्रसाद लेना चाहिये। कुछ बच्चे गुरुद्वारे में शोर मचाते है और खड़ें हो कर प्रसाद लेते हैं। ऐसे बच्चों पर गुरु जी तथा गुरु की संगत खुश नहीं होती।

कुछ बच्चे नंगे सिर गुरुद्वारे चले जाते हैं। इस तरह नंगे सिर गुरुद्वारे जाना सिख बच्चों को शोभा नहीं देता।

जब हम ने समाप्ति पर जोड़े (जूते) लेने हों तब भी लाइन में खड़े होना चाहिए। जल्दी नहीं करनी चाहिए। **गुरुद्वारे के अनुशासन में रहना हर एक सिख के लिये अनिवार्य है।**

२६. गुरुद्वारे व उनका प्रबन्ध

गुरु नानक देव जी अपने प्रचार दौरे के समय जहाँ भी प्रचार करने जाते वही **'सिख संगत'** कायम कर देते। संगतों के लिये एक साथ बैठ कर कीर्तन कथा आदि करने के लिए धर्मशाला कायम करते जिनको बाद में गुरुद्वारे कहा जाने लगा है। प्रत्येक गुरुद्वारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता है। ग्रंथी सिंघ, संगत को बाणी पढ़ कर सुनाते और समझाते है।बहुत सारे स्थानों पर सुबह शाम दोनों समय कथा कीर्तन होता है। प्रत्येक गुरुद्वारे के साथ गुरु का लंगर भी होता है। वहां आने-जाने वाले यात्री को निःशुल्क भोजन मिलता है, भले ही वह किसी भी जाति-बरादरी का हो। लंगर के स्थान पर आटा, दाल, सब्ज़ी, नमक, घी व अन्य सामान देने व अपने हाथों से सेवा करने को, गुरु घर के प्रेमी बहुत उत्तम समझते हैं।

गुरुद्वारे में आने-जाने वाले यात्रियों को रात में ठहरने के लिये स्थान, चारपाई, बिस्तरा आदि भी मिलता है। इस प्रकार गुरुद्वारे यात्री निवास का भी कार्य करते हैं।

कई गुरुद्वारों के साथ अलग यात्री निवास बने हुए हैं। जैसे श्री अमृतसर में गुरु रामदास निवास है, गुरु नानक निवास है, जहां यात्री आकर ठहरते हैं और विश्राम करते हैं।

पहले गुरुद्वारे के ग्रंथी बच्चों को गुरमुखी एवं गुरबाणी पढ़ाते थे ; आज भी कई गुरुद्वारों के साथ स्कूल बने हुए हैं या पाठनशालाएँ बनी होती हैं। कई गुरुद्वारों के साथ अलग दवाखाने बने हुए हैं। इस प्रकार गुरुद्वारे विद्यालय व दवाघर भी होते है। प्रत्येक गुरुद्वारे में धार्मिक पुस्तकों की लाइब्रेरी होनी बहुत ज़रूरी है, ताकि संगतें लाइबेरी से गुरबाणी, सिख इतिहास और सिख रहित मर्यादा संबंधी पुस्तकें पढ़ कर अपने सिखी विरसे को जान सकें।

जिन लोगों का घर घाट नहीं होता या जिनकी सेवा संभाल करने वाला कोई नहीं होता उन बेसहारों को गुरुद्वारे में स्थान व आसरा मिलता है। इसलिये गुरुद्वारे निराश व्यक्ति की आशा है।

उपरोक्त तथ्यों से पता चलता है कि सिख धर्म और सिखी जीवन में गुरुद्वारे बहुत महान् रखते हैं। इसलिए प्रत्येक सिख की इनके बारे में जानकारी होनी चाहिए। प्रत्येक सिख का यह प्रयास होना चाहिए कि गुरुद्वारे अपने सारे कार्य अच्छी तरह करे और गुरुद्वारों की आमदनी इन्हीं सेवा-कार्यों पर व्यय हो, बेकार कार्यों पर खर्च न की जाए। **यह देखना हमारा कर्त्तव्य है कि गुरुद्वारे में केवल गुरमति का ही प्रचार हो, मनमत का नहीं। गुरुद्वारे गुरमति प्रचार हेतु ही बनाये गए है।**

प्रबन्ध

जो गुरुद्वारे सिख कौम से ऐतिहासि से सम्बन्ध रखते है, उन्हें ऐतिहासिक गुरुद्वारे कहा जाता है। इस प्रकार के गुरुद्वारों के नाम पर अक्सर ज़मीन और जागीर लगी होती है ताकि इनकी आमदनी से गुरुद्वारे का खर्च आदि चल सके। इनके प्रबन्ध हेतु कानून बना हुआ है। इस कानून के अनुसार गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियां बनी हुई हैं। गुरुद्वारा कमेटियों का प्रबन्ध करने वाली सबसे बड़ी कमेटी **शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी** है। इस का कार्यालय अमृतसर में है। सभी गुरुद्वारा कमेटियां शिरोमणि कमेटी के अधीन हैं। ये सब कमेटियां शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी व अन्य स्थानीय कमेटियां आदि चुनाव द्वारा बनती हैं।

सिख संगत (स्त्री-पुरुष) मत या पर्ची डालकर इन कमेटियों के सदस्यों का चुनाव करती है। सदस्यों का चुनाव करने की यह प्रणाली बहुत घटिया है। सिख धर्म के अनुसार (वोटों) द्वारा सदस्य चुनने का कोई विधान नहीं है। **सिख विद्वानों को कोई अच्छा तरीका, मैंबर चुनने के लिये ढूढना चाहिए क्योंकि गुरुद्वारों की लाखों रुपयों की सम्पत्ति इन सदस्यों के हाथ में होती है।**

२७. कुछ प्रसिद्ध गुरुद्वारे

१. जन्म स्थान श्री ननकाना साहिब—यहां पर गुरु नानक देव जी का जन्म हुआ था। यह गुरुद्वारा पाकिस्तान में है। श्री ननकाना साहिब में और भी गुरुद्वारे हैं।

२. श्री पंजा साहिब—यहां पर गुरु नानक देव जी ने वली कंधारी का अहंकार तोड़ा था। यह सुन्दर गुरुद्वारा हसन-अब्दाल (पाकिस्तान) में है।

३. श्री बेर साहिब सुल्तानपुर लोधी साहिब— यहां पर गुरु नानक देव जी अपनी बहन बेबे नानकी जी पास १२-१३ वर्ष तक रहे। यह वह स्थान है जहां पर बेईं नामक नदी में स्नान करने के लिये गुरु जी जाया करते थे। इसके आस-पास और भी कई गुरुद्वारे हैं।

४. गुरुद्वारा नानक मता (पीलीभीत) — यू. पी. के पीलीभीत इलाके में श्री गुरु नानक देव जी के साथ सम्बन्धित गुरुद्वारा है। यहां पर गुरु जी ने योगियों के साथ चर्चा करके उनको प्रभु का सच्चा मार्ग बताया था। पहले इस स्थान का नाम गोरखमता था जो बाद में गुरु जी के नाम से नानकमता प्रसिद्ध हुआ। इस स्थान पर गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने भी प्रचार फेरी करते समय अपने चरण रखे थे।

५. श्री दरबार साहिब (खडूर साहिब) — इस स्थान पर गुरु अंगद देव जी रहा करते थे। इसके साथ ही गुरुद्वारा मल्ल-अखाड़ा है जहां पर गुरु अंगद देव जी नौजवानों को शारीरिक व्यायाम व कुश्तियाँ आदि का परीक्षण दिया करते थे।

६. बाउली साहिब (श्री गोइन्दवाल साहिब) —यह गुरुद्वारा गोइदवाल में ब्यास नदी के किनारे पर स्थित है। गुरु अमरदास जी ने यहां पर लोगो की सुविधा

के लिये एक बावली (जलकूप) का निर्माण करवाया था जिससे स्वच्छ जल उपलब्ध होता है।

७. श्री दरबार साहिब अमृतसर (हरिमन्दिर साहिब) — श्री अमृतसर शहर में अमृत सरोवर का निर्माण श्री गुरु रामदास जी ने करवाया था और श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इसे सम्पूर्ण करवाया था। इस सरोवर के बीच में गुरु अर्जुन देव जी द्वारा रचित श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी आसीन है। जिस भवन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी आसीन है, उसे स्वर्ण मन्दिर व गोल्डन टैंपल कहते है। इस की नीव गुरु जी ने साईं मियां मीर जी के हाथों रखवाई थी। सोने और संगमरमर के पत्थर की सेवा महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा करवाई गई थी। यह गुरुद्वारा सिख पंथ का केन्द्र स्थान है। इसके अतिरिक्त अमृतसर में और भी कई गुरुद्वारे हैं।

८. श्री दरबार साहिब (तरनतारन) —यह अमृतसर से १३ मील दूर दक्षिण की ओर स्थित है। इसका निर्माण गुरु अर्जुन देव जी ने करवाया था। इसके साथ बहुत बड़ा सरोवर (जलकुण्ड) है। यहीं पर गुरु जी ने रोगियों के रोग निदान हेतु बहुत बड़ा दवाखाना बनवाया था।

९. गुरुद्वारा डेरा साहिब (लाहौर) —पाकिस्तान के शहर लाहौर में दरिया रावी के किनारे पर स्थित यह गुरुद्वारा गुरु अर्जुन देव जी से सम्बन्धित है। यहां पर गुरु अर्जुन देव जी को बहुत कष्ट देकर शहीद किया गया था।

१०. श्री अकाल तख्त साहिब—श्री दरबार साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी के सामने सिख कौम का प्रसिद्ध गुरुद्वारा और शिरोमणि तख्त श्री अकाल तख्त साहिब है। इसका निर्माण श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी नें करवाया था। यहां पर आप दोपहर के बाद लोगों को इकट्ठा करते थे और यहां पर कुश्तियां होतीं, वीर गाथायें (वार) गाई जातीं और पंथक मामलों (मसलों, पंथक समस्याओं) पर निर्णय लिये जाते थे। यहां पर गुरु साहिब और शहीदों के शस्त्र पड़े हुए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बीड़ को, जिसका आसीन श्री दरबार साहिब में किया जाता है, रात को अकाल तख्त साहिब लाया जाता है।

११. गुरुद्वारा गुरु की बडाली (अमृतसर) — इस स्थान पर छठी पातशाही गुरु हरगोबिन्द साहिब जी का प्रकाश हुआ था। यह गुरुद्वारा गाँव बडाली (नज़दीक अमृतसर) में स्थित है।

---

१२. गुरुद्वार माता भागभरी (श्रीनगर) — कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में स्थित यह गुरुद्वारा छठी पातशाही श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी से सम्बन्धित है। यहां पर गुरु जी धर्म प्रचार भ्रमणों के समय ठहरा करते थे और माता भागभरी का श्रद्धा से तैयार किया गया कुर्ता जा कर पहना था। और माता भागभरी की तृष्णा पूर्ण करके बांख्शश की थी।

१३. शीशमहल (कीरतपुर साहिब) — श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने सतलुज नदी के किनारे ज़िला होशियारपुर (अब रोपड़ में) के पहाड़ी क्षेत्र में कीरतपुर शहर बसाया। इस के बीच में गुरुद्वारा शीश महल है। यहां पर गुरु जी रहा करते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब तथा श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी का जन्म यहीं पर हुआ था।

१४. गुरुद्वारा पंजोखेड़ा साहिब (अम्बाला शहर) — यह गुरुद्वारा श्री गुरु हरिकृष्ण जी साहिबान से सम्बन्धित है। जब गुरु जी दिल्ली गये थे, तो रास्ते में इसी स्थान पर ठहरे थे। यह गुरुद्वारा अम्बाला से नारायणगढ़ वाली सड़क पर स्थित है। इसी स्थान पर गुरु जी ने अनपढ़ छज्जू राम झीवर से गीता के अर्थ करवा कर लाल चंद पंडित का अहंकार तोड़ा था।

१५. श्री बंगला साहिब (दिल्ली) — यह गुरुद्वारा नई दिल्ली में उस स्थान पर स्थित है, जहां श्री गुरु हरिकृष्ण जी साहिब ने निवास किया था। यहीं पर आपके श्रद्धालु, राजा मिर्ज़ा जय सिंघ ने अपने लिए बंगला बनवाया था।

१६. श्री बाला साहिब (दिल्ली) — यह दिल्ली में यमुना नदी के तट पर वह स्थान स्थित है जहां पर श्री हरिकृष्ण साहिब के पार्थिक शरीर का अन्तिम संस्कार हुआ था। यहीं पर बाद में माता साहिब कौर और माता श्री सुन्दर कौर जी का संस्कार हुआ था।

१७. गुरु के महल (अमृतसर) —गुरु बाज़ार अमृतसर में यह वह गुरुद्वारा है जहां पर गुरु तेग बहादुर साहिब का जन्म हुआ था।

१८. गुरुद्वारा बाबा बकाला— यह गुरुद्वारा ज़िला अमृतसर के गांव बाबा बकाला में स्थित है। यहां पर गुरु तेग बहादुर जी गुरु बनने से पहले, अडिग रह कर प्रभु सिमरण में जुड़े रहते थे।

---

१९. श्री शीश गंज साहिब (आनन्दपुर साहिब) — यहां पर श्री गुरु तेग बहादुर जी के पार्थिक 'शीश' का संस्कार किया था। जिसे दिल्ली से भाई जैता जी मुगलों के कब्ज़े से छीन कर लाये थे।

२०. श्री शीश गंज साहिब (दिल्ली) — यह चांदनी चौक दिल्ली में लाल किले से आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह वह स्थान है जहां श्री गुरु तेग बहादुर जी को शहीद किया गया था।

२१. श्री रकाब गंज साहिब (दिल्ली) — यह चांदनी चौक से ३ मील की दूरी पर नई दिल्ली में श्री गुरु तेग बहादुर जी की याद में वह सुन्दर स्थान है जहां पर गुरु के सिख भाई लक्खी शाह ने मुगलों के कब्ज़े से छुड़ा कर लाये गये गुरु जी के 'धड़' का संस्कार किया था।

२२. श्री हरिमन्दिर साहिब, तख्त श्री पटना साहिब (बिहार) — यहां पर श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी का जन्म हुआ था। यह सिख कौम का दूसरा तख्त है। यहां पर गुरु साहिब से सम्बन्धित और भी गुरुद्वारे हैं।

२३. श्री केसगढ़ साहिब (श्री आनन्दपुर साहिब) — आनंदपुर साहिब में यह गुरु गोबिन्द सिंघ जी का गुरुद्वारा है। यहां पर ही सन् १६९९ की बैसाखी को पांच प्यारों का चुनाव किया था और खालसा पंथ की स्थापना की थी। यह सिख कौम का तीसरा तख्त है। यहां पर होले महले के अवसर पर बहुत भारी जोड़ मेला लगता है।

२४. श्री पाउंटा साहिब (हिमाचल प्रदेश) — पहाड़ी रियासत नाहन में यह गुरु गोबिन्द सिंघ जी का गुरुद्वारा है। यहां पर आपने किला बनवाया था। भंगाणी का युद्ध भी इसी के निकट हुआ था। यहाँ पर ही साहिबज़ादे अजीत सिंघ का जनम हुआ था और यही हीं जापु साहिब, स्वव्ये और अकाल उस्तति वाणीओ की रचना की थी।

२५. श्री चमकौर साहिब (पंजाब) — यहां 'गढ़ी साहिब' नामक गुरु गोबिन्द सिंघ जी का गुरुद्वारा है। इस गढ़ी में ४० सिंघों ने १० लाख फौज का मुकाबला किया था। साहिबज़ादा अजीत सिंघ व साहिबज़ादा जुझार सिंघ भी यहां शहीद हुए थे।

२६. गुरुद्वारा फतेह गढ़ साहिब (सरहंद) (आधुनिक फतेहगढ़ साहिब ज़िले में) — यहां पर गुरु गोबिन्द सिंघ जी के दो छोटे साहिबज़ादे बाबा ज़ोरावर सिंघ और फतेह सिंघ जी को ज़िंदा ही दीवार में चिनवा कर सरहंद के नवाब वज़ीर खान ने शहीद करवाया था। यहां पर ही माता गुजरी जी ने शहीदी प्राप्त की थी।

२७. गुरुद्वारा ज़फरनामा (कांगड़ ज़िला बठिंडा) — बठिंडे ज़िले के गांव कांगड़ में सुशोभित यह गुरुद्वारा वह स्थान है जहां पर गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने फारसी में **'जीत की पत्रिका'** (ज़फरनामा) भाई दया सिंघ जी के हाथ औरंगज़ेब को भेजी थी।

२८. श्री दरबार साहिब मुक्तसर साहिब (आधुनिक फरीदकोट) — यहां पर माई भाग कौर, भाई महां सिंघ व अनेक साथियों ने मुगल फौज के साथ घमासान युद्ध किया था। यहां पर गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने शहीद शूरवीरों को सम्मानित किया था। यहां पर एक बहुत बड़ा सरोवर (जलकुंड) भी है। साथ ही गुरुद्वारा शहीद गंज है। यहां पर मुक्तसर के युद्ध में शहीद हुए शहीदों का संस्कार किया था।

२९. श्री दमदमा साहिब (साबो की तलवंडी—बठिंडा) — ज़िला बठिंडा के गांव साबो की तलवंडी में दशमेश जी का गुरुद्वारा है। इसे सिखों की काशी भी कहा जाता है। यहां पर गुरु जी ९ मास से भी अधिक समय तक ठहरे थे। यहीं पर भाई डल्ला की परीक्षा ली गई थी। यहां पर ही उसको अमृत पान करवा कर भाई डल्ला सिंघ बनाया था। गुरु ग्रंथ साहिब की वर्तमान 'बीड़' गुरु साहिब जी ने यहीं पर लिखवाई थी। यह गुरुद्वारा सिख कौम का पांचवां तख्त भी है।

३०. श्री हजूर साहिब, श्री अबचल नगर (नादेड़) — यह दक्षिण में गोदावरी नदी के किनारे पर नादेड़ शहर के पास श्री दशमेश जी का पवित्र स्थान है। यहां पर आप ज्योति ज्योत समाए थे। यह खालसा पंथ का चौथा तख्त है। यहीं पर गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु गद्दी प्रदान की थी और आदेश दिया था कि उनके पश्चात् कोई देहधारी गुरु नहीं होगा गुरु पंथ पांच प्यारे गुरु का शरीर होंगे और गुरु ग्रंथ साहिब ज्योति स्वरूप गुरु होंगे।

---

२८. सदा याद रखें

१. सिख ने केवल एक अकाल पुरख का नाम ही सिमरण है जो सब को पैदा करने, पालन पोषण करने तथा मारने के समर्थ है ।

२. गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त किसी अन्य देहधारी को गुरु नहीं मानना और न ही किसी को प्रणाम (मत्था टेकना) करना है ।

३. सिख ने अमृत वेले (तड़के) उठ कर स्नान के बाद वाहिगुरु का स्मरण करना है और फिर गुरबाणी का पाठ (नितनेम) करना है ।

४. गुरबाणी का पाठ करते समय जल्दी नहीं करनी चाहिये । प्यार सत्कार सहित, मन को टिका कर, समझ विचार कर शुद्ध पाठ करना चाहिये ।

५. गुरुसिख को रोज़ाना गुरुद्वारे जाकर कीर्तन कथा श्रवण करके अपने जीवन को सफल बनाना है । सिख के लिये धार्मिक स्थान केवल गुरुद्वारा ही है अन्य कोई नहीं ।

६. सिखों ने आपस में मिलते समय 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह ही बुलानी है ।

७. गुरबाणी की पोथियों, गुटकों आदि को रुमाल में लपेट कर सत्कार सहित रखना है और जूठे हाथ नहीं लगाने चाहिये ।

८. सिख ने अपना नाम 'सिंघ' या 'कौर' शब्द सहित लिखना है । नाम के साथ जाति गोत नहीं लिखना ।

९. सिख धर्म में नाम सिमरण को ही सच्चा तीर्थ माना गया है । और तीर्थ यात्रा या तीर्थ स्नान की सिख धर्म मों कोई महानता नहीं है ।

१०. सिखों ने ऐतिहासिक गुरुद्वारों के दर्शन करने जाना है ताकि सिख इतिहास की जानकारी हो जाए और सिख अपने बहुमूल्य विरासत को जान सकें ।

११. सिख ने कुश्तियों तथा दूसरी खेलों में हिस्सा लेना है । मगर गंदी फ़िल्में और नाटक, जिनमें गंदे सीन दिखाए जाते हैं, उनसे दूर रहना है ।

१२. सिख ने कभी भी किसी किस्म का नशा (शराब, भंग, तम्बाकू, सिग्रेट, स्मैक) आदि नहीं करना ।

१३. सिख लड़कियों ने नाक कान का छेदना तथा छेदक गहनों का प्रयोग नहीं करना क्योंकि सिख रहित मर्यादा अनुसार मना है ।

१४. सिख स्त्रियों के लिये घुंघट निकालना सिख धर्म में मनाह है ।

१५. सिख पुरुष तथा स्त्री के लिये नंगे सिर बाज़ारों में घूमना तथा नंगे सिर रहना मनाह है । केशों के सत्कार के लिये हर समय दस्तार या चुन्नी से केश ढाँपकर रखने है ।

१६. सिख स्त्रियों ने किसी किस्म का कोई व्रत नहीं रखना । करवा चौथ, अमावस, पूर्णमासी, आदि व्रत नहीं रखने, निरोल मनमति है ।

१७. सिख कभी श्राद्ध नहीं करते और न ही श्रादों में हिस्सा लेना है ।

१८. सिख के लिये सारे दिन शुभ हैं । अच्छे-बुरे दिनों की विचार नहीं करनी । संग्राद, अमावस, पूर्णमासी आदि दिन कोई खास पवित्र नहीं बल्कि बाकी दिनों जैसे ही हैं ।

१९. गुरसिख ने कभी किसी पंडित या ज्योतिषी पर विश्वास नहीं करना और न ही राशि फल के चक्कर में पड़ना है । जन्म समय जन्म-कुण्डली नहीं बनवानी और शादी के लिये साहा मूर्हत नहीं निकलवाना ।

२०. सिख ने मूर्ति पूजा नहीं करनी । फोटो या मूर्त्ति को हार नहीं चढ़ाना, धूप देना सिख रहित मर्यादा अनुसार मनाह है । गुरु साहिब की प्रचलित तस्वीरे भी असल तस्वीरे नहीं हैं और और न ही गुरु साहिब की फोटो तस्वीरे या मूर्त्ति ही बनवानी चाहिये ।

२१. श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पीढ़े को मुठियां भरना, दीवारों या थड़ों पर नाक रगड़ना या मंजी साहिब के नीचे पानी (जल) रखना मनमति है ।

२२. किसी मनुष्य का सतिगुरु के प्रकाश समय संगत में गदेला या कुर्सी पर बैठना मनमति है ।

२३. कीर्त्तन करते समय गुरबाणी से वाहर की मनघंड़त और फालूत पंक्तियां लगा कर धारणा (लय) लगाना मनमति है ।

२४. संगत में एक समय एक ही क्रार्यक्रम होना चाहिए, अर्थात् कथा या कीर्त्तन या पाठ । अखंड पाठ या सहज पाठ के साथ उसी स्थान पर कथा, कीर्त्तन या लैक्चर नहीं होना चाहिए ।

२५. अखंड पाठ या सहज पाठ स्वयं करना चाहिए। यदि खुद न कर सको तो किसी समझदार पाठी (ग्रंथी) से करवा सकते हो, मगर खुद पाठी के पास बैठकर पाठ सुनना चाहिए। ऐसा न हो कि पाठी अकेला पाठ करता रहे और पाठ रखवाने वाले घरेलू कामों में लगे रहे। ऐसे पाठ का कोई लाभ नहीं। खाली कर्म काण्ड है।

२६ कड़ाह प्रशाद और लंगर खाने के समय जल्दी नहीं करनी चाहिये।

२७. संगत में कड़ाह प्रशाद बांटने से पहले पांच प्यारों का हिस्सा निकाल कर बाँटना चाहिए। फिर प्रशाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सेवा में बैठे हुए सिंघ के लिये कटोरी में डाल कर देना चाहिए ताकि वह सेवा मुक्त होने पर खा सके। फिर संगत में बांटना चाहिए।

२८. अरदास होने के वक्त संगत के सारे स्त्री-पुरुष हाथ जोड़ कर खड़े होने ज़रूरी है।

२९. गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी (हुक्म) को मानना ही गुरु ग्रंथ साहिब जी का पूर्ण सत्कार है

३०. सिख के लिये हुक्म है कि प्रत्येक कार्य को आरम्भ (शुरू) करने से पूर्व वाहिगुरु के सम्मुख अरदास करें।

२९. कंठ करने के लिये शब्द
(१ से २५ तक)

३०. अरदास

ੴ वाहिगुरु जी की फतहि ॥

श्री भगौती जी सहाय ॥ वार श्री भगौती जी की पातशाही दसवीं ॥

प्रथम भगौती सिमर के गुरु नानक लई ध्याये । फिर अंगद गुरु ते अमरदास रामदासै होई सहाये । अर्जुन हरगोबिंद नो, सिमरों श्री हरिराये । श्री हरिकृष्ण ध्याईये जिस डिठे सभ दुख जाये । तेग बहादुर सिमरए घर नउ-निधि आवै धाये । सभ थाईं होये सहाये । दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सभ थाईं होये सहाये । दसां पातशाहियां दी जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा ध्यान धर के बोलो जी वाहिगुरु ।

पंजा पिआरिआं चौहां साहिबजादिआं, चालीआं मुक्तिआं, हठीआं, जपीआं तपीआं जिनहां नाम जपिआ, वंड छकिया देग चलाई, तेग वाही, देख के अणडिठ कीता, तिनहां पिआरिआं सचिआरिआं दी कमाई दा ध्यान धर के, खालसा जी बोलो जी वाहिगुरु ।

जिन्हां सिघां-सिघंणीआं ने धर्म हेत सीस दित्ते, बंद बंद कटवाए खोपड़ियां लुहांईयां, चरखडीआं ते चढ़े, आरिआं नाल चिराए गए, गुरुद्वारा दी सेवा लई कुर्बानियां कीतीआं धर्म नहीं हारिया सिखी केसां सुआसां संग निभाई, तिनहां दी कमाई दा ध्यान धर के, खालसा जी बोलो जी वाहिगुरु ।

पंजां तख्तां सर्बत गुरुदवारिआं दा धिआन धरके, बोलो जी वाहिगुरु ।

प्रथम सर्बत खालसा जी की अरदास है ज़ी, सर्बत खालसा जी को वाहिगुरु, वाहिगुरु, चित आवे, चित आवन का सदका सर्ब सुख होवे, जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रछिआ रियात देग तेग फतहि बिर्द की पैज, पंथ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी दे बोल बाले, बोलो जी वाहिगुरु ।

सिखां नूं सिखी दान, केस, दान, रहित दान, विवेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानां सिर दान, नाम दान सिरी अमृतसर जी दे इशनान चौकिआं झंडे, बुंगे जुगो जुग अटल, धर्म का जैकार, बोलो जी वाहिगुरु ।

सिखां दा मन नीवां, मत उच्ची, मत दा राखा आप वाहिगुरु । हे अकाल पुरख ! आपणे पंथ दे सदा सहाई दातार जीओ ! सिरी ननकाणा साहिब ते होर गुरद्वारिआं, गुरधामां दे, जिनहां तो पंथ नू बिछोडिआं गया है, खुले दर्शन दीदार ते सेवा संभाल दा दान, खालसा पंथ नू बख्शो ।

हे निमाणियां दे माण, निताणिआं दे ताण, निओटिआ दी ओट, सच्चे पिता वाहिगुरु आप दे हज़ूर ... दे अरदास है जी ।

अखर बाधा घाटा, भुल-चूक माफ करनी सर्बत दे कारज रास करने ।

सोई पिआरे मेल, जिनां मिलिआं तेरा नाम चित्त आवे । नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सर्बत दा भला ।

... यहां पर इस बाणी का नाम लो, जो पढ़ी है या जिस कार्य हेतु संगत एकत्र हुई है उसका वर्णन योग्य शब्दों में करो ।

इस के बाद फतहि और जैकारा बुलाया जाये ।

कुछ खास प्रश्न

१ ੴ (इक ओंकार)से गुरप्रसादि तक के अर्थ लिखो।
'अजूनी सैभं' का पाठ इकट्ठा करना है या अलग अलग ?

२. दस गुरु साहिबान के नाम क्रमवार लिखो।

३. पांच प्यारों और चार साहिबज़ादों के नाम लिखो।

४. पांचों तख़्तों के नाम और उनकी संक्षेप व्याख्या लिखो।

५. सिख किसे कहते है ? पांच कुरहितें कौन कौन सी है ?

६. पांच ककारों के नाम और इनकी महानता लिखें।

७. 'जागत जोत जपै निसबासुर' वाला पूरा सवईया लिखो और अर्थ भी करो।

८. सिखों का जैकारा कौन-सा है और कब लगाया जाता है ?

९ (i) सिखों को आपस में मिलते समय क्या बोलना है (अभिनंदन करना है) और इस के लिये किस ने हुक्म दिया है ?

(ii) क्या फतहि बुलाते समय 'श्री' लगाना चाहिये ?

१०. (i) अब हमारे हाज़र-नाज़र गुरु कौन है ? इनको गुर गद्दी कब और किसने दी ?

(ii) अब सिखों का गुरु कोई देहधारी क्यों नहीं हो सकता ?

११ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को मत्था टेकने का क्या अर्थ है ? क्या सिख गुरु ग्रंथ साहिब के सिवाये किसी और को मत्था टेक सकता है ?

१२. अच्छे सिख बच्चे के दस गुण लिखो।

१३ (i) हमारा सांझा परिवार कौन सा है ? हम इसके मैंबर कैसे बन सकते हैं ?

(ii) संयुक्त परिवार के मैंबर होने के नाते हमारा जन्म स्थान कौन-सा है और वह कहां पर है ?

(iii) सिखों के माता-पिता का नाम क्या है ?

१४. धरती, आकाश, आग, पानी, सूर्य, चन्द्रमा आदि प्रभु क्यों नहीं हो सकते ? प्रभु का घर (परमात्मा का) कौन-सा है ?

१५. (i) केशों के सत्कार के लिये कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है ?

(ii) क्या सिख स्त्रियों या लड़कियों आंखों द्वारा भौंहें की काटना, केशों की बेअदबी में शामिल है ?

१६. गुरुद्वारे जाते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

१७. सिख पंथ को कौन से त्योहार तथा दिन मनाने चाहिए ?

१८. शराब, तम्बाकू एवं पान के पांच पांच नुक्सान लिखो।

१९. (i) प्रत्येक ख को अमृतपान करना क्यों ज़रूरी है ?

(ii) अमृतपान कराते समय सभी सिखों को एक ही बाटे (कटोरे) में क्यों अमृतपान कराया जाता है ?

(iii) जिन्होंने केस तो रखे हुए हैं मगर अमृतपान नहीं किया, उन्हें गुरु गोबिन्द सिंघ जी का क्या आदेश है ?

२०. क्या तीर्थ स्नान से मन पवित्र होता है। यदि नहीं तो मन को पवित्र करने का क्या साधन है ?

२१ (i) सिख धर्म में गुरुद्वारे की क्या महानता है

(ii) क्या गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियों के मैम्बरों को वोटों से चुने जाने का तरीका ठीक है ?

(iii) ऐतिहासक गुरुद्वारा किसे कहते है ?

२२. इस पुस्तक में वर्णन किये गए गुरुद्वारों का संक्षेप इतिहास तथा महत्त्व लिखो।

२३. इस पुस्तक में लिखे शब्दों को कंठ करें।

२४. सम्पूर्ण अरदास लिखें।

कंठ करने के लिए शब्द

(१) आसा, घर ७, महला ५ (३६४)

हरि का नामु, रिदै नित धिआई।। संगी साथी, सगल तराई।।
गुरू मेरै संगि[3], सदा है नाले।।
सिमरि[4] सिमरि[4] तिसु[5], सदा समाले।।१।।रहाउ।।
तेरा कीआ मीठा लागै।। हरि[1] नामु[2] पदारथु[6] नानकु[7] मांगै।।

(२) रागु[8] बैराड़ी, महला ५, घर १ (७२०)

संत जना मिलि[9], हरि[1] जसु[10] गाइऔ।।
कोटि[11] जन्म के, दूख गवाइऔ।।१।।रहाउ।।
जो चाहत, सोई मनि[12] पाइऔ।।
करि[13] किरपा, हरि[1] नामु[2] दिवाइऔ।।१।।
सरब सूख हरि[1] नामि[2] वडाई।।
गुर प्रसादि[14] नानक मति[15] पाई।।२।।

(३) सूही, महला ५ (७४२)

दरसनु[16] देखि जीवां, गुर तेरा।। पूरन करमु[17] होइ, प्रभ मेरा।।
इह बेनंती सुणि[18] प्रभि[19] मेरे।।
देहि[20] नामु[21] करि[22] आपणे चेरे।।१।।रहाउ।।
अपणी सरणि[23] राखु[24] प्रभ दाते।। गुरप्रसादि[25] किनै विरलै जाते।।२।।
सुनहु[26] बिनऊ प्रभ मेरे मीता।। चरण कमल वसहि[27] मेरै चीता।।३।।
नानकु[28] एक करै अरदासि[29]।। विसरु[30] नाहीं पूरन गुणतासि[31]।।४।।

उच्चारण : 1. हर 2. नाम 3. संग 4. सिमर 5. तिस 6. पदारथ 7. नानक 8. राग 9. मिल 10. जस 11. कोट 12. मन 13. कर 14. प्रसाद 15. मत 16. दरशन 17. करम 18. सुण 19. प्रभ 20. देह 21. नाम 22. कर 23. सरण 24. राख 25. गुरप्रसाद 26. सुनहु (सुनों) 27. वसहं (वसैंह) 28. नानक 29. अरदास 30. विसर 31. गुणतास

(४) पउड़ी (सिरी रागु की वार) (९१)

कीता लोड़ीऐ कंमु[1], सु[2] हरि[3] पहि[4] आखीऐ ।।
कारजु[5] देइ सवारि[6], सतिगुर[7] सचु[8] साखीऐ ।।
संतां संगि[9] निधानु[10], अंमृतु[11] चाख़ीऐ ।।
भै भंजन मिहरवान, दास की राखीऐ ।।
नानक हरि[3] गुण गाइ, अलखु[12] प्रभु लाखीऐ ।।३० ।।

(५) भैरऊ, महला ५ (११३६)

ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ।। भऊ नही लागै जां ऐसे बुझीआ ।।१।।
राखा एकु[13] हमारा सुआमी ।।
सगल घटां का अंतरजामी ।।१।।रहाउ ।।
सोए अचिंता जागि[14] अचिंता ।। जहां कहां प्रभु[15] तूं वरतंता ।।२।।
घरि[16] सुखि[17] वसिआ, बाहरि[18] सुखु[19] पाइआ ।।
कहु नानक गुरि[20] मंत्र द्रिड़ाइआ ।।३।।

(६) टोड़ी महला ५ (७१३)

सतिगुर, आइओ सरणि[21] तुहारी ।।
मिले सूखु[17] नामु[22] हरि[23] शोभा,
चिंता लाहि[24] हमारी ।।१।।रहाउ ।।
अवर न सूझै दूजी ठाहर, हारि[25] परिओ तऊ दुआरी ।।
लेखा छोड़ि[26], अलेखै छूटह, हम निरगुन लेहु[27] ऊबारी ।।
सद बखसिंदु[28] सदा मिहरवाना, सभनां देइ अधारी ।।
नानक दास संत पाछै परिओ, राखि[29] लेहु[27] इह बारी ।।२।।

उच्चारण : 1. कंम 2. स 3. हर 4. पह 5. कारज 6. सवार 7. सतगुर 8. सच 9. संग 10. निधान 11. अमृत 12. अलख 13. एक 14. जाग 15. प्रभ 16. घर 17. सुख 18. बाहर 19. सुख 20. गुर 21. शरण 22. नाम 23. हर 24. लाहं (लाहें) 25. हार 26. छोड़ 27. लेह 28. बखिशंद 29. राख

(७) धनासरी, महला ५ (६८२)

औखी घड़ी न देखण देई, अपना **बिरदु**[1] **समालें**।।
हाथ देइ राखै अपने कउ, **सासि**[2] **सासि**[2] **प्रतिपाले**।।१।।
प्रभ सिऊ **लागि**[3] रहिओ मेरा **चीतु**[4]।।
आदि[5] **अंति**[6] **प्रभु**[7] सदा सहाई,
धंनु[8] हमारा **मीतु**[9]।।१।।रहाउ।।
मनि[10] बिलास भए, साहिब के अचरज **देखि**[11] **बडाई**।।
हरि[12] **सिमरि**[13] **सिमरि**[13] आनद **करि**[14] नानक,
प्रभि[7] पूरन पैज रखाई।।२।।

(८) पऊड़ी, सोरठि की वार (६५२)

रैणि[15] **दिनसु**[16] **परभाति**[17], तूंहै ही गावणां।।
जीअ जंत सरबत, नाऊ तेरा धिआवणा।।
तूं दाता **दातारु**[18], तेरा दित्ता खावणा।।
भगत जनां कै **संगि**[19], पाप गवावणा।।
जन नानक सद बलिहारै, **बलि**[20] **बलि**[20] जावणा।।२५।।

(६) कानड़ा, महला ५ (१२६६)

बिसरि[21] गई सभ **ताति**[22] **पराई**।।
जब ते **साधि**[23] **संगति**[24] **मोहि**[25] पाई।।१।।रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना, सगल **संगि**[26] **हम कऊ बनि**[27] **आई**।।१।।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ, एह **सुमति**[28] **साधू ते पाई**।।२।।
सभ महि[29] **रवि**[30] **रहिआ प्रभु**[31] **एकै, पेखि**[32] **पेखि**[32] **नानक बिगसाई**।।३।।

उच्चारण : 1. बिरद 2. सास 3. लाग 4. चीत 5. आद 6. अंत 7. प्रभ 8. धन 9. मीत 10. मन 11. देख 12. हर 13. सिमर 14. कर 15. रैण 16. दिनस 17. परभात 18. दातार 19. संग 20. बल 21. बिसर 22. तात 23. साध 24. संगत 25. मोहे 26. संग 27. बन 28. सुमत 29. मह 30. रव 31. प्रभ 32. पेख

(१०) सोरठि, महला ५ (६२६)

हरि मनि[1] तनि[2] वसिआ सोई।। जै जै कारू करै सभु[3] कोई।।
गुर पूरै की वडिआई।। ताकी कीमति[4] कही न जाई।।१।।
हऊ कुरबानु[5] जाई तेरे नावै।।
जिस नो बखसि[6] लैहि[7] मेरे पिआरे,
सो जसु[8] तेरा गावै।।१।।रहाउ।।
तूं भारो सुआमी मेरा।। संतां भरवासा तेरा।।
नानक, प्रभ शरणाई।। मुखि[9] निंदक कै छाई।।२।।

(११) रामकली, महला ३, अनंदु[10] (६२०)

आवहु[11] सिख सतिगुरू के पिआरिहो, गावहु[12] सच्ची बाणी।।
बाणी त गावहु[12] गुरू केरी, बाणीआं सिरि बाणी।।
जिन कऊ नदरि[13] करमि[14] होवै, हिरदै तिनां समाणी।।
पीवहु[15] अंमृतु[16], सदा रहहु[17] हरि[18] रंगि[19], जपिहु[20] सारिंग पाणी।।
कहै नानकु[21] सदा गावहु[12], एह सच्ची वाणी।।२३।।

(१२) वडहंस, महला ५ (५६२)

धनु[22] सु[23] वेला, जितु[24] दरसनु[25] करणा।।
हऊ बलिहारी सतिगुर चरणा।।१।।
जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे।।
मनु[26] जीवै प्रभ नामु[27] चितेरे।।१।।रहाउ।।
सचु[28] मंत्रु[29] तुमारा, अंमृत बाणी।।
सीतल पुरख, द्रिषटि[30] सुजाणी।।२।।
सचु[28] हुकमु[31] तुमारा, तखति[32], निवासी।।

उच्चारण : 1. मन 2. तन 3. सभ 4. कीमत 5. कुरबान 6. बखश 7. लैहं (लैहें) 8. जस 9. मुख 10. आनंद 11. आवो 12. गावो 13. नदर 14. करम 15. पीवो 16. अमृत 17. रहो 18. हर 19. रंग 20. जपिहं 21. नानक 22. धन 23. स 24. जित 25. दरशन 26. मन 27. नाम 28. सच 29. मंत्र 30. द्रिषट 31. हुकम 32. तखत

आइ न जावै मेरा प्रभु[1] अबिनाशी ।।३।।
तुम मिहरवान दास हम दीना ।
नानक, साहिबु[2] भरपुरि[3] लीणा ।।४।।

(१३) मः ४, गऊड़ी की वार (३०५-६)

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए,
सु[4] भलके उठि[5] हरि[6] नामु[7] धिआवै ।।
उदमु[8] करे भलके परभाती, इसनानु[9] करे अंमृतसरि[10] न्ावै ।।
उपदेसि[11] गुरू हरि[6] हरि[6] जपु[12] जापै, सभि[13] किलविख पाप दोख लहि[14] जावै ।
फिरि[15] चड़ै दिवसु[16] गुरबाणी गावै, बहंदिआं ऊठदिआं हरिनामु धिआवै ।।
जो सासि[17] गिरासि[18] धिआए मेरा हरि[6]-हरि[6], सो गुरसिखु[19] गुरू मनि भावै ।।
जिस नो दइआलु[20] होवै मेरा सुआमी, तिसु[21] गुरसिखु[19] गुरू उपदेशु सुणावै ।।
जनु[22] नानकु[23] धूड़ि[24] मंगै, तिसु[21] गुरसिख की, जो आपि[25] जपै, अवरहं नामु[7] जपावै ।।

(१४) वार १२, पऊड़ी ४ (भाई गुरदास जी)

हऊ तिसु[26] घोलि[27] घुमाइआ, गुरमति[28] रिदै गरीबी आवै ।।
हऊ तिसु[26] घोलि[27] घुमाइआ, पर नारी दै नेड़ि[29] न जावै ।।
हऊ तिसु[26] घोलि[27] घुमाइआ, पर दरबै नो हथु[30] न लावै ।।
हऊ तिसु[26] घोलि[27] घुमाइआ, पर निंदा सुणि[31] आपु[32] हटावै ।।
हऊ तिसु[26] घोलि[27] घुमाइआ, सतिगुर दा ऊपदेश कमावै ।।
हऊ तिसु[26] घोलि[27] घुमाइआ, थोड़ा सवैं थोड़ा ही खावै ।।
गुरमुखि[33] सोई सहजि[34] समावै ।।४।।

उच्चारण : 1. प्रभ 2. साहिब 3. भरपुर 4. स 5. उठ 6. हर 7. नाम 8. उदम 9. इशनान 10. अमृतसर 11. उपदेश 12. जप 13. सभ 14. लह 15. फिर 16. दिवस 17. सास 18. गिरास 19. गुरसिख 20. दइआल 21. तिस 22. जन 23. नानक 24. धूड़ 25. आप 26. तिस 27. घोल 28. गुरमत 29. नेड 30. हथ 31. सुण 32. आप 33. गुरमख 34. सहज

(१५) सूही, महला ५ (७४६-५०)

जिस के सिर **ऊपरि**[1] तूं सुआमी, सो **दुखु**[2] कैसा पावै।।
बोलि[3] न जाणै माइआ **मदि**[4] माता, मरणा **चीति**[5] न आवै।।१।।
मेरे रामराइ, तूं संतां का संत तेरे।।
तेरे सेवक कऊ भऊ **किछु**[6] नाही,
जमु[7] नही आवै नेरे।।१।।रहाउ।।
जो तेरै रंगि राते सुआमी, **तिनु**[8] का जनम मरण **दुखु**[2] नासा।।
तेरी बखश न मेटै कोई, सतिगुर का दिलासा।।२।।
नामु[9] **धिआइनि**[10] सुख फल **पाइनि**[11], आठ पहर आराधहि।।
तेरी शरणि, तेरै भरवासै, पंच दुशट लै **साधहि**[12]।।
गिआनु[13] **धिआनु**[14] **किछु**[6] **करमु**[15] न जाणा, सार न जाणा तेरी।।
सभ ते वडा **सतिगुरु**[17] **नानकु**[16], जिनि कल राखी मेरी।।४।।

(१६) सोरठि, महला ५ (६१७)

काम क्रोध लोभ झूठ निंदा, इन ते **आपि**[18] **छडावहु**[19]।।
इह भीतर ते इन कऊ **डारहु**[20], आपन **निकटि**[21] **बुलावहु**[22]।।१।।
अपुनी **बिधि**[23] **आपि**[18] **जनावहु**[24],
हरिजनु[25] मंगल **गावहु**[26]।।१।।रहाऊ।।
बिसुर नाही कबहू हीए ते, इह **विधि**[27] मन **महि**[28] **पावहु**[29]।।
गुरु[30] पूरा भेटिओ वड़भागी, जन नानक **कतहि**[31] न **धावहु**[32]।।२।।

(१७) सोरठि, महला ५ (६१३)

हम मैले, तुम उजल करते, हम निरगुन तूं दाता।।
हम मूरख तुम चतुर सिआणे, तूं सरब कला का गिआता।।१।।

उच्चारण : 1. ऊपर 2. दुख 3. बोल 4. मद 5 चीत 6. किछ 7. जम 8. तिन 9. नाम 10 धिआइन 11. पाइन 12. साधहि 13. गिआन 14. धिआन 15. करम 16. नानक 17. सतिगुर 18. आप 19 छडावो 20. डारो 21. निकट 22. बुलावो 23. बिध 24. जनावो 25. हरजन 26 गावो 27 विध 28. मन 29 पावो 30. गुर 31. कतह 32 धावो

माधो हम ऐसे, तूं ऐसा।।
हम पापी, तुम पाप खंडन,
नीको ठाकुर देसा।।१।।रहाउ।।
तुम सभ साजे, **साजि**[1] निवाजे, जीऊ **पिंडु**[2] दे प्राना।।
निरगुनीआरे, गुन नहीं कोई, तुम **दानु**[3] **देहु**[4] मिहरवाना।।२।।
तुम **करहु**[5] भला, हम भलो न **जानहृ**[6], तुम सदा सदा दइआला।।
तुम सुखदाई पुरखु बिधाते, तुम राखहु अपुने बाला।।३।।
तुम निधान, अट्टल सुलितान, जीअ जंत **सभि**[7] जाचै।।
कहु[9] नानक हम इहै हवाला, **राखु**[8] संतन कै पाछै।।४।।

(१८) धनासरी, महला ५ (६७७)

धरि **बाहरि**[10] तेरा भरवासा, तूं जन कै हैं **संगि**[11]।।
करि[12] किरपा प्रीतम प्रभ अपुने, **नामु**[13] जपऊं **हरि**[14] **रंगि**[15]।।१।।
जन कऊ प्रभ अपने का **ताणु**[16]।।
जो तूं करहिं करावहिं सुआमी,
सा **मसलति**[17] **परवाणु**[18]।।१।।रहाउ।।
पति[19] **परमेशरु**[20] **गति**[21] **नाराइणु**[22], **धनु**[23] गुपाल गुण साखी।।
चरन शरन नानक दास, **हरि**[14] **हरि**[14], संती इह **बिधि**[24] जाती।।२।।

(१६) माझ, महला ५ (१०३)

तूं मेरा पिता, तूं है मेरा माता।।
तूं मेरा **बंधपु**[25], तू मेरा भ्राता।।
तूं मेरा राखा सभनी थाईं, ता भउ केहा काड़ा जीउ।।१।।
तुमरी किरपा ते **तुधु**[26] पछाणां।। तूं मेरी ओट, तूं है मेरा माणा।।

उच्चारण : 1. साज 2. पिंड 3. दान 4. देह 5. करो 6. जानो 7. सभ 8. राख 9. कह 10. बाहर 11. संग 12. कर 13. नाम 14. हर 15. रंग 16. ताण 17. मसलत 18. परवाण 19. पत 20. परमेशर 21. गत 22. नाराइण 23. धन 24. बिध 25. बंधप 26. तुध

तुझ[1] बिनु[2] दूजा अवरु[3] न कोई, सभु[4] तेरा खेलु[5] अखाड़ा जीउ।।२।।
जीअ जंत सभि[4] तुधु[1] ऊपाए।। जितु[6] जितु[6] भाणा तितु[7] तितु[7] लाए।।
सभ किछु[8] कीता तेरा होवै, नाही किछु[8] असाड़ा जीउ।।
नामु[9] धिआई महां सुखु[10] पाइआ।।
हरिगुण गाइ, मेरा मनु[11] सीतलाइआ।।
गुरि[12] पूरै वजी वाधाई, नानक जिता बिखाड़ा जीउ।।४।।

(२०) गौंड, महला ५ (८६४)

गुरू गुरू गुरु[13] करि[14] मन मोर।। गुरू बिना मै नाही होर।।
गुर की टेक रहहु[15] दिनु राति[16]।। जा की कोइ न मेटै दाति[17]।।१।।
गुरु[13] परमेसरु[18] एको जाणु[19]।।
जो तिसु[20] भावै सो परवाणु[21]।।१।।रहाउ।।
गुर चरणी जा का मनु[22] लागै।। दूखु[23] दरदु[24] भ्रम ता का भागै।।
गुर की सेवा पाइ मानु[25]।। गुर ऊपरि[26] सदा कुरबान।।३।।
गुर का दरसनु[27] देखि[28] निहाल।। गुर के सेवक की पूरन घाल।।
गुर के सेवक कऊ दुखु[29] न बिआपै।। गुर का सेवकु[30] दहदिस जापै।।३।।
गुर की महिमा कथनु[31] न जाइ।। पारब्रहमु[32] गुरु[13] रहिआ समाइ।।
कहु[33] नानक जा के पूरे भाग।। गुर चरणी ता का मनु[34] लाग।।४।।

(२१) सोरठि, महला ५ (६३०)

सरब सुखां का दाता सतिगुरु[35], ता की शरनी पाईऐ।।
दरशनु[36] भेटत होत अनंदा, दूखु[23] गइआ हरि[37] गाईऐ।।१।।
हरि[37] रस पीवहु[38] भाई।।

उच्चारण : 1. तुझ 2. बिन 3. अवर 4. सभ 5. खेल 6. जित 7. तित 8. किछ 9. नाम 10. सुख 11. मन 12. गुर 13. गुर 14. कर 15. रहूं 16. रात 17. दात 18. परमेसर 19. जाण 20 तिस 21. परवाण 22. मन 23. दुख 24. दरद 25. मान 26. ऊपर 27. दरसन 28. देख 29. दुख 30. सेवक 31. कथन 32. पारब्रहम 33. कह 34. मन 35. सतिगुर 36. दरसन 37. हर 38. पीवो

नाम जपहु[1], नामो आराधहु[2],
गुर पूरे की शरनाई।।१।।रहाउ।।
तिसहि[3] परापति[4] जिसु[5] धुरि[6] लिखिआ, सोई पूरनु[7] भाई।।
नानक की बेनंती प्रभ जी, नामि[8] रहां लिव लाई।।१।।

(२२) रामकली, महला ५ (६०१)

गुरु पूरा, मेरा गुरु[9] पूरा।।
रामनामु[10] जपि[11] सदा सुहेले,
सगल बिनासे रोग कूरा।।१।।रहाउ।।
एकु अराधहु[12] साचा सोइ।। जा की सरनि सदा सुखु होइ।।१।।
नींद सुहेली राम की लागी भूख।। हरि[13] सिमरत बिनसे सभ दूख।।२।।
सहजि[14] अनंद करहु[15] मेरे भाई।। गुरि[16] पूरै सभ चिंत मिटाई।।३।।
आठ पहर प्रभ का जपु[17] जापि[18]।। नानक राखा होआ आपि[19]।।४।।

(२३) आसा, कबीर जीओ (४८४)

अंतरि[20] मैलु जे तीरथ नावै, तिसु[21] बैकुंठ न जाना।।
लोक पतीणे कछू न होवै, नाही रामु[22] अयाना।।१।।
पूजहु[23] रामु[22] एकु[24] ही देवा।।
साचा नावणु[25] गुर की सेवा।।१।।रहाउ।।
जल कै मजनि[26] जे गति[27] होवै, नित नित मेंडुक नावहिं।।
जैसे मेडुक तैसे ओइ नर, फिरि[28] फिरि[28] जोनी आवहि[29]।।२।।
मनहु[30] कठोरु[31] मरै बानारसि[32] नरक न बांचिआ जाई।।
हरि[13] का संतु[33] मरै हाड़ंबै, ता सगली सैन तराई।।३।।

उच्चारण : 1. जपो 2. अराधो 3. तिसह 4. पराप्रत 5. जिस 6. धुर 7. पुरन 8. नाम 9. गुर 10. रामनाम 11. जप 12. आराधो 13. हर 14. सहिज 15. करो 16. गुर 17. जप 18. जाय 19. आप 20 अंतर 21. तिस 22. राम 23. पूजो 24. एक 25. नावण 26. मजन 27. गत 28. फिर 29. आवहें 30. मनों 31. कठोर 32. बानारस 33. संत

दिनसु[1] न रैनि[2] बेदु[3] नही शासत्र तहा बसै निरकारा।।
कहि[4] कबीर नर तिसहि[5] धिआवहु[6], बावरिआ संसारा।।४।।

(२४) आसा, शेख फरीद जीओ की बाणी (४८८)

दिलहु[7] मुहबति[8] जिंन सेई सचिआं।।
जिन मनि[9] होरु[10], मुखि[11] होरु[10], सि[12] कांडे कचिआं।।१।।
रते इशक खुदाइ, रंगि[13] दीदार के।।
बिसरिआ जिन नामु[14], ते भुइ भारु[15] थीए।।१।।रहाउ।।
आपि[16] लीए लड़ि[17] लाइ, दर दरवेश से।।
तिन धंनु[18] जणेंदी माउ, आए सफलु[19] से।।
परवदगार अपार, अगंम बेअंत तूं।।
जिना पछाता सचु[20], चुंमां पैर मूं।।३।।
तेरी पनहु[21] खुदाइ, तूं बखशंदगी।।
शेख फरीदै खैरु[22], दीजै बंदगी।।४।।

(२५) सलोक मः ५ (रामकली की वार मः ५) (९६१)

करि किरपा किरपाल, आपे बखसि[23] लै।।
सदा सदा जपी तेरा नामु[24], सतिगुर पांइ पै।।
मन तन अंतरि[25] वसु[26], दूखां नासु[24] होइ।।
हथ देहि[27] आपि[28] रखु[29], विआपै भउ न कोइ।।
गुण गावां दिनु[30] रैणि[31], एतै कंमि[32] लाइ।।
संत जना कै संगि[33], हउमै रोगु[34] जाइ।।
सरब निरंतरि[35] खसमु[36], एको रवि[37] रहिआ।।
गुरपरसादी सचु[38], सचो सचु[38] लहिआ।।
दइआ करहु[39] दइआल, अपणी सिफति[40] देहु[41]।।
दरशनु देखि[42] निहाल, नानक प्रीति[43] एह।।१।।

उच्चारण : 1. दिनस 2. रैन 3. बेद 4. कह 5. तिसे 6. धिआवो 7. दिलों 8. मुहबत 9. मन 10. होर 11. मुख 12. स 13. रंग 14. नाम 15. भार 16. आप 17. लड़ 18. धन 19. सफल 20. सच 21. पनह 22. खैर 23. बखश 24. नाम 25. अंतर 26. वस 27. दे 28. आप 29. रख 30. दिन 31. रैण 32. कंम 33. संग 34. रोग 35. निरंतर 36 खसम 37. रव 38. सच 39. करो 40. सिफ़त 41. दे 42. देख 43. प्रीत

१ੴ वाहिगुरू जी की फतहि। ।

सिख मिशनरी कालेज का उद्देश्य

हम सिख हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि हमें सिखी असूलों(नियमों) का पता हो, गुरबाणी के अर्थ भाव सिख इतिहास की जानकारी, सिख रहित मर्यादा के असूल सिख फिलासफी, सिख सभ्यता की हर गुरसिख को जानकारी होनी अति आवश्यक है। यदि हमें इनका ज्ञान नहीं हो हम कैसे सिख कहला सकते हैं ? पाठ हम करते जा रहे हैं, पर यदि कोई हमसे गुरबाणी के किसी वाक्य का अर्थ पूछ ले और हम जवाब न दे सकें तो यह हमारे लिए कितनी शर्मनाक बात होगी। दस गुरू साहिबों एवं प्राचीन गुरसिखों के इतिहास की जानकारी होनी आवश्यक है, यदि हम अपना बेमिसाल इतिहास नहीं जानते तो हम कैसे दूसरे को बता सकेंगे कि हम कौन-सी विरासत के मालिक हैं। सिख रहत् मर्यादा के उसूल कौन-कौन से हैं, इस विषय पर हम आमतौर पर अज्ञानी हैं। घर में पाठ रखना हो या जीवन में कोई संस्कार करना हो, गुरमत क्या है, इसे जानने के लिए हमें ग्रंथी सिंघों या ज्ञानी व्यक्ति पर निर्भर होना पड़ता है। पर क्या सिख होते हुए ऐसे असूलों की जानकारी हमें स्वयं को होनी ज़रूरी नहीं ?

आज हम देखते हैं हमारे में जो कमज़ोरियां आ रही हें, उसका मुख्य कारण यही है कि हमने सिखी के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की ज़िमेवारी नहीं समझी। यदि हमें गुरसिखी के असूलों का स्वयं ज्ञान हो तो हम अपने नौजवानों को जो अनजाने में दाड़ी व केशों की बेअदवी कर रहे हैं, नशे पी रहे हैं, देहधारी पाखंडी गुरूओं को मान रहे हैं, को गुरबाणी के उसूल दृढ़ करवा कर, खून मे लिखा अपना बलिदानी इतिहास सुना कर सिख धर्म की ओर प्रेरित कर सकते हैं। जो नौजवान आज बागी हो रहे हैं तो इसमें उन बेचारों का क्या दोष ? दोष तो हमारा अपना है, हमारे प्रचारकों का है, हमारी अगवाई करने वालों का है जो ऐसे नौजवानों को सिख धर्म की ओर नहीं प्रेरित कर सकें।

आज ना तो सिखी हमें माता-पिता से, घर से ही मिल रही है (क्योंकि माता-पिता ही सिखी से दूर हो चुके हैं तथा मादा प्रस्ती में बुरी तरह उलझे हुए है) व ना ही सिखी 'खालसा स्कूलों, कालेजों मे ही मिल रही है, क्योंकि किसी स्कूल या कालेज को छोड़कर सिखी के संदेश देने का प्रबंध हम इनमें कर ही नहीं सके या किया ही

नहीं, जहां पहले खालसा, स्कूलों कालेजों में होता था। गुरद्वारों में से सिखी की सिक्षा मिलनी चाहिए थी क्योंकि गुरुद्वारे बने ही सिखी का प्रचार करने के लिए, पर आज गुरुद्वारों में फैली गुटबाजी, पार्टीबाजी गुरुद्वारे पर कब्जे की भूख, गोलक (गुरूद्वारे में चढ़ाए हुए धन) की लड़ाई, नौजवानों के मार्ग में बाधा बनी हुई हैं, जिस कारण वह गुरूद्वारों में हो रहे धर्म प्रचार को नहीं स्वीकारते। फिर जो प्रचारक हमने अपने धर्म स्थानों में लगा रखे हैं, उनमें से बहु-गिनती अनपढ़ हैं। यदि हमारे बहुत सारे प्रचारकों की, ना स्कूली शिक्षा हो, ना वह धर्म के क्षेत्र में पूरा ज्ञान रखते हों, ना हि उच्च महान् जीवन, ना ही प्रचार के लिए मिशनरी उत्साह हो तो फिर यह आशा कैसे रखी जा सकती है कि ऐसे प्रचारक नौजवान पीढ़ी पर अपने प्रचार का अच्छा प्रभाव डाल सकें। सत्य तो यह है कि प्रचारकों का यह क्षेत्र केवल एकमात्र माया कमाने का एक साधन बना कर रख दिया गया है, व प्रचार का वास्तविक उद्देश्य अलोप होता जा रहा है।

जब हम दूसरे धर्मों ईसाई मत, इस्लाम मत आदि की ओर देखते हैं तो उनके प्रचारक व प्रचारक तैयार करने वाली संस्थाएं (अदारे) देख कर दंग रह जाते हैं कि कैसे उन्होंने ग्यारह सालों का लम्बा समय लगाकर लाखों कि गिनती में प्रचारक तैयार किए हैं व प्रचार के क्षेत्र में उन्हें पूरी तरह तैयार किया है। पर जब हम अपने प्रचारकों की ओर देखते हैं तो असहाय से होकर रह जाते हैं क्योंकि हमारे प्रबंधकों ने प्रचारकों की तैयारी के लिए कोई बड़े संगठित व योग्य मिशनरी कालेज नहीं खोला, जहां प्रचारकों को सिख धर्म की पूरी शिक्षा देकर तैयार करके प्रचार के क्षेत्र में भेजा जा सके। योग्य प्रचारकों की कमी कारण ही हमारा धर्म जो दुनिया का सबसे बढ़िया व आलमगीर धर्म है। जो हर देश, प्रदेश में, बिना किसी जात-पात, अमीर-गरीब, वर्ग भेद, रंग रूप आदि बिना भेदभाव प्रचार किया जा सकता है, संसार में तो क्या पंजाब में भी सही ढंग से नहीं प्रचार सका

उपरोक्त कमी को महसूस करते हुए 'सिख मिशनरी कालेज' आरम्भ किया गया है, जिस द्वारा 'दो साला सिख मिशनरी कोर्स (Correspondonce Course) करवाने का प्रबंध किया गया है। पढ़े-लिखे नौजवान, इस दो साला सिख मीशनरी कोर्स करने के बाद (Elementry Sikh Missionaries) के तौर पर कार्य करेगें। यह गुरमति प्रचारक अपनी कार्य करते हुए प्रचार का काम (Part time) में बिना किसी प्रकार की तन्खाह फल आदि के करेंगे।